प्रारंभिक भाषा और साक्षरता के सहयोग के लिए कक्षा पुस्तकालय की स्थापना

Early Literacy Initiative
Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad

Practitioner Brief (17)
2019

Supported by
TATA TRUSTS

This Practitioner Brief is part of a series brought out by the Early Literacy Initiative anchored by the Azim Premji School of Education at the Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.

प्रारंभिक भाषा और साक्षरता के सहयोग के लिए कक्षा पुस्तकालय की स्थापना

आप जहाँ भी देखें जादू देख सकते हैं। आराम से बैठिए, आपको बस एक किताब चाहिए।- डॉ. सेउस (Seuss), द कैट इन द हैट

परिचय

सावधानीपूर्वक चयनित साहित्यों के संग्रह से घिरे रहने को एक विशेष सुविधा के रूप में नहीं, बल्कि प्रत्येक बच्चे को एक साक्षर व्यक्ति के रूप में विकसित करने के लिए अनिवार्य आवश्यकता के रूप में देखा जाना चाहिए। अच्छे साहित्य तक पहुँच हर बच्चे का अधिकार है। साहित्य अपने खुद की दुनिया को देखने का आइना भी है और बाहरी दुनिया को देखने की खिड़की भी (गाल्डा 1998)। इसके अलावा, साहित्य बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने में और लिखित संसार को अनुभव करने एवं उसे समझने में बड़ी भूमिका निभाता है।



चित्र 1. जीवंत पुस्तकालय पाठकों को जीवन के लिए विकसित करने में एक लम्बा रास्ता तय कर सकता है.
छवि सौजन्य से : मृदुला कोशी , सामुदायिक पुस्तकालय परियोजना.

सुसंधारित शाला पुस्तकालय या कक्षा पुस्तकालय घर में पुस्तकों की कमी को पूरा कर सकता है (मिल्स,2011)। स्टीफ़न क्रैशन के अनुसार, "... निरंतर मौन वाचन, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और अंत में अनुदेशात्मक वाचन के फलस्वरूप पुस्तकालय तक पहुँच और उसका उपयोग माध्यमिक शाला में और उसके आगे भी, पठन स्कोर के सतत पूर्वानुमान के रूप में उभरा ।" (क्रैशन, ली , एवं मैक किलन, 2008, मिल्स 2011 में उद्धृत, पे. 54)

तीन प्रकार के पुस्तकालय तक बच्चों की अच्छी पहुँच हो सकती है- सामुदायिक पुस्तकालय (जो समुदाय के सभी सदस्यों के लिए खुला हो), शाला पुस्तकालय (जिसका उपयोग पूरा स्कूल करता है); और कक्षा

पुस्तकालय (जो केवल उस कक्षा के छात्रों के लिए है)। इस सारपत्र में, बच्चों को जीवन के लिए पाठक के रूप में विकसित करने में जो महत्वपूर्ण भूमिका पुस्तकालय निभाता है उसे देखते हुए हम कक्षा पुस्तकालय के महत्व को रेखांकित करने प्रयास कर रहे हैं और इसे स्थापित करने का तरीका भी बता रहे हैं ।

कक्षा में अलग पुस्तकालय की ज़रुरत क्यों है? क्या स्कूल/शाला पुस्तकालय पर्याप्त नहीं है? शाला पुस्तकालय तक विद्यार्थियों की पहुँच सप्ताह में औसतन एक ही बार,पुस्तकालय कालांश के दौरान, हो पाती है। इसके विपरीत, कक्षा पुस्तकालय पूरे दिन भर उनकी पहुँच में रहता है। शिक्षिका अपने कक्षा में ही इस प्रकार के संसाधनों के साथ रोज़ पाठ्यक्रम संबंधी विस्तार, मुखर वाचन सत्र आदि की योजना बना सकती है; और वह बच्चों को स्वतंत्र पठन की आदत विकसित करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

इसके अतिरिक्त, ये पुस्तकें कक्षा के बच्चों की ज़रुरत और रुचि को ध्यान में रखकर सावधानी पूर्वक चुने गए होते हैं; जबकि शाला पुस्तकालय सभी आयु वर्ग (बच्चे और स्टाफ़) की भिन्न-भिन्न ज़रुरतों और रूचिओं को पूरा करता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तकालय स्थापित करने के कुछ तत्व तो पूर्व में उल्लेखित तीनों प्रकार के पुस्तकालय – समुदाय, शाला और कक्षा, में सामान ही होंगे। फिर भी इस सारपत्र में दिए गए सुझाव कक्षा पुस्तकालय के लिए हैं।
यह सारपत्र उन शिक्षकों को संबोधित करता है जिनकी भाषा शिक्षण को समृद्ध बनाने के लिए कक्षा पुस्तकालय स्थापित करने में रुचि है, एवं अन्य जिनकी रुचि या उत्सुकता हो कि कक्षा पुस्तकालय कैसे स्थापित किया जाय।
ELI ने पहले पुस्तकालय संचालित करने के लिए गतिविधियों पर आधारित सारपत्र प्रकाशित की है[1]; उस सारपत्र को इस सारपत्र के साथ भी उपयोग किया जा सकता है।

> यह सुनिश्चित करने का कि हम साक्षर बच्चे विकसित कर रहे हैं, सबसे आसान तरीका है उन्हें पढ़ना सिखाना और उन्हें दिखाना कि पढ़ना आनंददायक कार्य है। और इसका मतलब है, अपने सरलतम स्वरुप में, ऐसी पुस्तकें उपलब्ध कराना जिनका वे आनंद ले सकें, इन पुस्तकों तक उनकी पहुँच बनाना और उन्हें पढ़ने देना।
>
> -नील गैमैन (2013) ‘*क्यों हमारा भविष्य पुस्तकालय पठन और दिवास्वप्न पर निर्भर है*’ में

[1] अधिक जानकारी के लिए देखें ELI के सारपत्र 3 “कक्षा पुस्तकालय के माध्यम से भाषा और साक्षरता विकास को बढ़ावा देना”

कक्षा पुस्तकालय स्थापित करते समय कौन-कौन से मुख्य पहलू ध्यान में रखें? पाठकगण, पुस्तकों का संकलन, पारस्परिक संवाद और कक्षा पुस्तकालय के संचालन और क्रियान्वयन का प्रबंधन। आगे आने वाले भागों में हम प्रत्येक पहलू पर चर्चा करेंगे।

पाठकगण

हमारे लिए अपने विद्यार्थियों को एवं जहाँ से वे आते हैं उनको समझना बहुत महत्वपूर्ण है- वे कौन सी भाषा बोलते हैं; वे किस सामाजिक पृष्ठभूमि से आते हैं ; उनके सीखने का स्तर और ज़रूरतें क्या हैं।

बच्चों को अपने पठन में परिचित और नवीन दोनों प्रकार के खुराक की ज़रुरत होती है। कभी-कभी बच्चों के लिए पुस्तकें संकलित करने में हमें दो चरम स्थितियाँ देखने को मिलती है। कुछ निजी पुस्तकालयों में, जिन्हें अच्छा फण्ड मिलता है, हमें केवल अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों, शीर्षकों और लेखकों का चयन देखने को मिलता है। जो बच्चे ऐसे पुस्तकालयों से पुस्तकें लाकर पढ़ते हैं उन्हें उन पुस्तकों में अपने जैसे पात्र या चरित्र मिले ऐसी संभावना नहीं होती है।



चित्र *2*। छोटे बच्चों का समूह पुस्तक पलट कर देखते हुए

छवि सौजन्य से:लक्ष्मी करुणाकर, बुगुरी समुदायिक पुस्तकालय, बैंगलोर

संभव है वे रसबेरी, पाई और नीली आँखों वाले दोस्तों के बारे में एवं ऐसे सन्दर्भों, परिवेशों और व्यवहारों के बारे में पढ़ते हुए बड़े हुए हों जिनसे वे सर्वथा अपरिचित हैं। किसी भी किताब में जो आप पढ़ते हैं स्वयं का या अपने जीवन का निरूपण नहीं देखने से साफ़ संकेत मिलता है कि आप, आपके लोग या मुद्दे कोई मायने नहीं रखते हैं जितना कि दूसरे लोग या मुद्दे मायने रखते हैं। जिन किताबों को आप पढ़ते हैं, उनमें क्या हो रहा है इससे स्वयं को जोड़ना एवं उसे समझना आप के लिए कठिन भी हो सकता है।

फिर इसके विपरीत दूसरी अति भी है। ऊपर वर्णित परिस्थितियों से बचने के लिए कुछ पुस्तकालय , खासतौर से अच्छी सोच वाले, प्रगतिवादी स्कूलों और संस्थाओं द्वारा संचालित, ऐसी चयनित किताबों का संकलन करने की कोशिश करते हैं जो पूरी तरह से पाठकों को उनके सन्दर्भों में निरुपित करती हैं। उनका विचार है कि जो परिचित है वह नन्हें पाठकों के लिए उचित होता है और जो अपरिचित है उससे नन्हें पाठकों के लिए सम्बन्ध जोड़ना कठिन होता है । किन्तु किताबों की महत्वपूर्ण ताकत यह है कि ये हमें हमारे अनुभूत यथार्थ से परे विचारों तक ले जाती हैं-ये हमें अलग-अलग दुनिया से मेल/सामना कराती हैं । और सिर्फ इसलिए कि स्थान अपरिचित है, मुद्दे अपरिचित नहीं हो जाते। दोस्ती, नुकसान और आशा जैसे विषयवस्तु सभी सांस्कृतिक सन्दर्भों में विद्यमान होते हैं और उनमें सार्वभौमिक आकर्षण होते हैं।

इसलिए, ऐसी किताबों का बढ़िया और संतुलित संकलन करने के लिए, जो सहूलियत देता हो और कई तरीके से चुनौती भी प्रस्तुत करता हो, आपको अपने पाठकों के विकासात्मक ज़रूरतों, चिंताओं, और सन्दर्भों को समझना होगा। किताबें आइना और खिड़की दोनों की भूमिका निभाती हैं – वे बताती हैं कि हम क्या हैं और वे ऐसी वास्तविकता के लिए,जिसका हमने अभी तक अनुभव नहीं किया है, हमारे मस्तिष्क को भी सक्रिय करती हैं और हमें दूसरी वास्तविकता के प्रति ज़्यादा जागरूक और दयावान बनाती हैं (गाल्डा 1998)



चित्र 3 पुस्तकालय के लिए किताबों के संकलन में विविधता महत्वपूर्ण है. किताबें आइना और खिड़की दोनों की भूमिका निभाती हैं

छवि सौजन्य से : जमुना इनामदार , अरिपना फाउंडेशन बैंगलोर

अलग-अलग पठन स्तरों की किताबों का चयन कारगर हो सकता है, ताकि हर बच्चा या बच्ची, चाहे उसका पठन स्तर जो भी हो, उस संकलन से जुड़ सकता/सकती है।

संकलन

प्राथमिक कक्षा पुस्तकालय में इस संकलन में चित्रों वाली किताबें, अध्याय वाली किताबें (कक्षा 2 से आगे), सूचनापरक किताबें, सन्दर्भ किताबें, पत्रिका, दृश्य-श्रव्य सामग्री, बच्चों का अखबार वगैरह -वगैरह। विविधता महत्वपूर्ण है।

"विविधता शब्द में स्वीकार्यता और सम्मान समाहित है। विविधता अर्थात यह समझना कि प्रत्येक व्यक्ति अनूठा है; और वर्ग, जाति, लिंग, लैंगिक रुझान, सामाजिक-आर्थिक स्थिति,आयु, शारीरिक योग्यता, धर्म और राजनितिक विचारधारा आदि से संबंधित अपने व्यक्तिगत भिन्नता को पहचानना है । इसका मतलब है सहिष्णु होते हुए और वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति के अनोखेपन को गले लगते हुए और सराहना करते हुए आगे बढ़ना है। पुस्तकालय को सबसे विश्वसनीय वातावरण के रूप में पहचाना गया है जहाँ इन भिन्नताओं की खोज एवं अन्वेषण होना चाहिए ।" (ओवर्टन , 2016, p. 2).

जो बात ओवर्टन ने कही है (ऊपर बॉक्स देखें) उससे हमें यह पहचानने में मदद मिलती है कि पुस्तकालय क्या विविधता लाता है। कक्षा पुस्तकालय में बच्चों को लाभ मिलेगा, यदि आप ऐसे भिन्न-भिन्न विषयों की किताबें संकलित करने का प्रयास करते हैं जो आपके बच्चों के विश्वदर्शन के निर्माण में सहायक हों ।

पकड़ो पकड़ो उस बिल्ले को[2], *कन्ना पन्ना*[3], *काली और धामण साँप*[4], *क्यूँ क्यूँ लड़की*[5], *मक्खी के पंख*[6], और *आइ डिंट अंडरस्टैंड*[7]जैसे शीर्षक विविध विषयों की किताबों के उदहारण हैं ।

उदहारण के लिए '*पकड़ो पकड़ो उस बिल्ले को*' और '*कन्ना पन्ना*' *अपंगता को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं* और ऐसा महसूस नहीं कराती कि कोई बच्ची व्हील चेयर में है या दृष्टि बाधित बच्चा अपने चुनौतियों के कारण सीमित हो जाता है। ये वो कहानियाँ है जो अपने पात्रों की सराहना करती हैं और हमें दिखाती हैं कि वे ऐसे व्यक्ति कैसे बने रहते हैं जो इन चुनौतियों को खुद पर हावी नहीं होने देंगे।

---

[2] Vishwanath, T. (Illustrator: Nancy Raj). (2013) *Catch that cat* Chennai: Tulika Publishers.

[3] Whitaker, Z. (Illustrator: Niloufer Wadia) (2015) *Kanna panna* Chennai: Tulika Publishers

[4] Whitaker, Z. (Illustrator: Srividya Natarajan) (2005) *Kali and the rat snake* Chennai: Tulika Publishers

[5] Devi, M. (Illustrator: Kanyika Kini) (2012) *The why why girl* Chennai: Tulika Publishers

[6] Rajendran, S. (Illustrator: Arun Kaushik) (2006) *Wings to fly* Chennai: Tulika Publishers

[7] Shrinivasan, M। (Illustrator: Shubham Lakhera)। (2018)। *I didn't understand*। Chennai: Tulika Publishers।

[8] All these titles are available in Hindi, Tamil, Malayalam, Kannada, Telugu, Marathi, Gujarati and Bengali।

शायद आप सोच रहे होंगे कि कक्षा पुस्तकालय शुरू करने के लिए आपके पास कितनी किताबें होनी चाहिए। यह एक सही प्रश्न है। क्योंकि हम कभी-कभी अत्यधिक चुनौतीपूर्ण मुद्दों पर काम करते हैं जहां संसाधनों का अभाव हो सकता है। आप 1 : 3 अनुपात में पुस्तकें लेकर काम करने का प्रयास करें- अर्थात कक्षा के प्रत्येक बच्चे के लिए तीन अच्छी पुस्तकें हो । यह एक बड़ी संख्या की तरह लग सकता है। आप पूछ सकते हैं कि अगर मेरी कक्षा में 50 बच्चे हैं, तो क्या मुझे शुरू करने के लिए 150 पुस्तकों की आवश्यकता होगी? हालांकि, यह आवश्यक नहीं है कि आप हर बच्चे के लिए तीन पुस्तकों से ही शुरू करें, समय के साथ-साथ आप अपने लिए इस अनुपात का लक्ष्य तय कर सकते हैं।

रोचक साइड-नोट : पश्चिमी संदर्भों में, फाउंटास और पिनेल (1996) जैसे शिक्षक कक्षा पुस्तकालयों के लिए लगभग 300-600 पुस्तकों के संग्रह की सलाह देते हैं, जो कक्षा के स्तर और प्रत्येक शीर्षक की प्रतियों की संख्या पर निर्भर करता है। उनकी गणना का अनुमान है कि शिक्षकों को प्रथम -ग्रेड के बच्चों से स्कूल के वर्ष के दौरान अनुमानित 100-125 पुस्तकें पढ़ने की अपेक्षा रखनी चाहिए और बड़े बच्चों को ,जो मोटी-मोटी पुस्तकों को पढ़ सकते है ,प्रति वर्ष 50-75 पुस्तकें पढ़ने की अपेक्षा रखनी चाहिए (नीमन, 1999 में उद्धृत)। हालांकि वर्तमान समय में हम अधिकांश भारतीय कक्षाओं में इस प्रकार की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकते, हम निश्चित रूप से उपलब्ध पुस्तकों की संख्या को अधिकतम करने का प्रयास कर सकते हैं।

पुस्तकों के अच्छे संग्रह के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू उनकी गुणवत्ता भी है। एकअच्छा पुस्तकालय निम्न गुणवत्ता वाली पुस्तकों को बाहर करके और उच्च गुणवत्ता वाली पुस्तकों को शामिल करने का प्रयास करेगा। लेकिन बच्चों की पुस्तकों में निम्न या उच्च गुणवत्ता क्या है? विस्तार से इस विषय का पता लगाना हमारे इस सारपत्र के दायरे से परे है[9]। संक्षेप में कहे तो हम उन किताबों से बचने की कोशिश करेंगे जो कुछ खास लोगों एवं समूहों के प्रति भेदभाव, बहिष्कार या रूढ़िवादी दृष्टिकोण रखते हैं। हम उन पुस्तकों से दूर रहेंगे जो चर्चा के योग्य नहीं है, या जो छात्रों के विकास की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है। हम भिन्न संस्कृति वाली किताबों के चयन को पूरी तरह से छोड़ नहीं सकते, लेकिन परिचित एवं भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली किताबों के चयन में संतुलन बना सकते है। हम ऐसी किताबों को शामिल करने की कोशिश करेंगे जिनके कथानक , पात्र, विषयवस्तु, स्थान चर्चा के योग्य हो या ,जो पाठ और चित्रों का रोचक तरीके से उपयोग करते हों। हम यह समझते हैं कि एक निश्चित भाषा में पर्याप्त उच्च गुणवत्ता वाली किताबें उपलब्ध नहीं हो सकती हैं। वर्तमान समय में हमारे पास अंग्रेजी में अधिकतम विकल्प उपलब्ध हैं और प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं जैसे मराठी, तेलुगु ,उड़िया और आदिवासी भाषाओं में कम हैं।

---

[9] See National Council of Children's Literature's Guide to Good Books (YEAR) for an elaborate discussion of the idea of quality: http://eli|tiss|edu/wp-content/uploads/2017/08/Guide-to-Good-Books-1|pdf

ऐसे संदर्भ में, संकलन के लिए उच्च-गुणवत्ता वाली पुस्तकों की बात करने का क्या अर्थ है? ज़मीनी स्तर पर काम कर रहे लोग जिनसे हमने बात की, उन्होंने हमें इन मुद्दों को दरकिनार करने के सुझाव दिए।

- यदि उच्च-गुणवत्ता वाला बाल साहित्य सीमित है, तो हम सुनिश्चित करते हैं कि हमारे पास कम-से-कम ठीक-ठाक गुणवता वाली इतनी किताबें तो हों जो हो बच्चों को व्यस्त करने के लिए पर्याप्त हों। बुद्धि और हास्य की किताबें, जैसे तेनाली राम की कहानियाँ, पंचतंत्र या पौराणिक कहानियाँ, आपके संकलन का एक हिस्सा हो सकती हैं बशर्ते ये नैतिकता पढ़ाने का साधन न बन जाय। बच्चों ने जो पढ़ा है (या सुना है जो आपने उनके लिए पढ़ा है) उसके बारे में, कहानी के बारे में उनकी सोच और सीख के बारे में उनसे संवाद करने से बच्चे ज़्यादा रचनात्मक तरीके से जुड़ते हैं।
- यदि आपके पास बहुत कम विकल्प हैं, तो आप कक्षा में किताबें बनाकर[10] अपने संग्रह को बढ़ाने के तरीकों के बारे में सोच सकते हैं या कम विकल्पों के साथ रचनात्मक तरीके से जुड़ने के तरीके खोज सकते हैं।
- आप अन्य स्थानीय भाषाओं में भी पुस्तकों को जोड़ने पर विचार कर सकते हैं - उदाहरण के लिए, आप क्षेत्रीय भाषा की किताबें शामिल कर सकते हैं यदि आदिवासी भाषा में किताबें उपलब्ध नहीं हैं। आप बहुभाषी शिक्षाशास्त्र (multilingual pedagogies) का उपयोग करके क्षेत्रीय भाषा को समझने में बच्चों की मदद कर सकते हैं ।

आदर्श नहीं होने के बावजूद भी , ये रणनीतियाँ छोटे स्तर पर मदद कर सकती हैं, तब तक पूरी ताकत के साथ उड़ान भरने के लिए हम बच्चों के लिए बहुभाषी साहित्य के प्रकाशन की प्रतीक्षा भी करते रहें। हमें यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि मात्रा महत्वपूर्ण है लेकिन गुणवत्ता के साथ समझौता करके नहीं । मान लीजिए कि मुद्दा यह नहीं है कि जिस भाषा में आप काम कर रहे हैं, उसमें पर्याप्त उच्च-गुणवत्ता वाली पुस्तकें नहीं हैं, लेकिन आपने अभी तक पर्याप्त संकलन नहीं तैयार किया है या आपके संगठन के पास पर्याप्त संकलन नहीं है। एक तरीका यह है कि अन्य शिक्षकों के साथ मिलें और बारी - बारी से पुस्तकों के संग्रह को साझा करें। ऑर्गनाइजेशन फॉर अर्ली लिटरेसी प्रमोशन (OELP) जैसे संगठन, सालों से कक्षाओं में बारी - बारी से पुस्तकों के संग्रह को साझा करने वाली इस प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। प्रत्येक कक्षा में एक बार में 20 से 25 पुस्तकों का एक सेट होता है और संग्रह हर महीने बदलता है। बेशक पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने एकलव्य, पराग, तूलिका पब्लिशर्स और प्रथम बुक्स जैसे विभिन्न प्रकाशकों से 18,000 से अधिक (प्रत्येक शीर्षक की कम से कम 40 प्रतियों के साथ)

[10] अधिक जानकारी के लिए देखें ELI का सारपत्र 7 *"बच्चों का लेखन: कक्षाकक्ष में पुस्तक निर्माण"*

सावधानीपूर्वक चयनित पुस्तकों के संग्रह से एक बड़ा केंद्रीय पुस्तकालय बनाया है जिसमें विश्व पुस्तक[11](World Book Fair[11]) मेले से ली गयी पुस्तकें भी शामिल हैं।

पारस्परिक संवाद (अंतःक्रिया)

एक अच्छे कक्षा पुस्तकालय के मानदंड क्या हो सकते है जो उसे थोड़े कम अच्छे कक्षा पुस्तकालय से अलग करते हैं ? क्या होगा यदि आपके पास वे सभी किताबें और संसाधन हो जिनकी आपको आवश्यकता है, लेकिन आप देखते हैं कि बच्चे पुस्तकों के संकलन के तरफ आकर्षित नहीं हो रहे हैं ? चाहे आपको अपनी कक्षा में स्वतंत्र पठन के लिए एक विशेष समय दिया गया हो या चाहे आप भाषा या अन्य विषयों की कक्षा के दौरान संग्रह का उपयोग करते हैं ,आपको उन चर्चाओं (अंतःक्रिया) के स्वरूप पर विचार करने की आवश्यकता है जो बच्चे स्कूल में रहते हुए पूरे दिन करते हैं ।

अपने आप से ये सवाल पूछें:

- आप कितनी बार बच्चों को विशिष्ट चयनित पुस्तकों के डिस्प्ले को देखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं?
- क्या आप अपनी अनुमति के बिना बच्चे को किताबों को छूने देंगे?
- आपकी प्रतिक्रिया उस बच्चे के प्रति क्या होगी जो भाषा की कक्षा के दौरान दिए गए कार्यो को करने की बजाय, पुस्तक देख रहा है?
- क्या आप किताबों को उलट-पलट कर देखने के समय को निर्धारित समय तक ही सीमित करेंगे ?
- आपकी प्रतिक्रिया उस बच्चे के लिए क्या होगी जिसने किताब से एक पेज़ फाड़ा है? या किताब पर लिखा है?
- क्या आप किसी बच्चे को पुस्तक घर ले जाने की अनुमति देंगे?
- कक्षा में पुस्तकों का उपयोग करने के नियम क्या होंगे?आपको लगता है कि बच्चों को नियम तय करने की चर्चा का हिस्सा होना चाहिए?
- क्या आपके बच्चे किताबों तक पहुँचने बनाने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं और क्या आपकी कक्षा का माहौल भयमुक्त है?

आप इन सवालों का जवाब कैसे देते हैं, इससे तय होगा कि आपके छात्रों का किताबों के साथ कैसा संबंध है। । नियमों को स्थापित करने की प्रक्रिया जितनी अधिक लोकतांत्रिक होगी, आपके बच्चों को किताबों के आसपास उतना ही कम डर लगेगा। जितना अधिक उन्हें जिम्मेदारी लेने की अनुमति दी जाती है और किताबों तक उनकी जितनी अधिक स्वतंत्र पहुंच होगी, उनका किताबों के साथ संवाद उतना ही अच्छा होगा।

[11] For more details, visit: http://nbtindia। gov। in/nbtbook and http://nbtindia। gov। in/nbtbook/Client/InnerPage/16 history-of-ndwbf_ndwbf

आपकी कक्षा में किताबों के साथ अंतःक्रिया (interaction) की गुणवत्ता को तय करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि छात्रों को पुस्तकें संभालने और समय के साथ उनका सावधानी पूर्वक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

आइए इस बात पर विचार करें कि अपने छात्रों को किताबों के इस संकलन के और ज़्यादा करीब कैसे लायें। जैसा की पहले भी बताया गया है, ELI का गतिविधियों पर आधारित एक सारपत्र है, जिसका उपयोग आप बच्चों का किताबों के साथ पारस्परिक संवाद की गुणवत्ता बढाने के लिए कर सकते हैं। इसके अलावा,हम आपको" Comprehensive Literacy Model in Indian Classrooms [12]"को भी पढ़ने की सलाह देते है जिसमें हम आपको भाषा और साक्षरता शिक्षण की दैनिक कक्षा के 90 मिनट को प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए कुछ विचार सुझाते हैं।

कक्षा में व्यापक साक्षरता (comprehensive literacy) को सहारा देने के लिए कक्षा पुस्तकालय एक मूल्यवान संसाधन है। यदि आप रोज़ाना 30 मिनट भी अपने पुस्तकों के संकलन में से उपयुक्त पुस्तक के मुखर वाचन पर दें तो यह अन्य पहलुओं के साथ-साथ समझ के विकास , मौखिक भाषा के विकास, शब्दावली विकास, साहित्य की सराहना, रचनात्मक लेखन और पठन में सहायक हो सकता है। आप इन पुस्तकों का उपयोग साझा पठन, निर्देशित पठन या स्वतंत्र पठन के लिए भी कर सकते हैं।

कक्षा पुस्तकालय के संचालन और क्रियान्वयन का प्रबंधन(लॉजिस्टिक्स)

जगह -: आदर्शतः, आपके पास कक्षा में पुस्तकालय स्थापित करने के लिए एक निर्धारित स्थानहोगा एक ऐसा स्थान जो हवादार हो , जहाँ भरपूर रोशनी आती हो और बच्चें आसानी से वहां पहुँच सके। परन्तु तब क्या होगा जब कक्षा में जगह की कमी हो और आप पुस्तकों के लिए किसी स्थान को सुरक्षित नहीं कर सकते है?

एक सुगठित पठन कॉर्नर बनाने के कई तरीके हैं

- "Quality education support trust (QUEST)" ने , जो महाराष्ट्र में संसाधन अभावग्रस्त (रिसोर्स-चैलेंज्ड)कक्षा के लिए कार्यक्रम चलातें है , कक्षा के कोने में एक पुस्तक पेटी (किताबों से भरा हुआ धातु का छोटा बक्सा) रखी है।
- आप लकड़ी के बक्से और कार्टन का उपयोग भी कर सकते है जिसमें पुस्तकों को इस प्रकार रखा जाए जिससे उनका शीर्षक या मुख्य पृष्ठ दिखाई देता रहे। आप विभिन्न पठन स्तरों के लिए बक्से के अंदर खाने भी बना सकते है।
- अन्य विकल्प के रूप में , आप फर्श पर एक चटाई बीछा कर , उस पर किताबें फैला दें और बच्चों को हर दिन कुछ समय किताबें पढ़ने या पलट कर देखने के लिए दे सकते हैं ।
- यदि आप चाहते हैं कि बच्चे दिन में किसी भी समय किताबों तक पहुँच सकें, तो दीवार के साथ एक मजबूत तार बाँधें और उसपर किताबें लटकाएँ ताकि हर बच्चा उन तक पहुँच सके।

[12] ELI's Brief Number 12: Comprehensive Literacy Instruction Model in Indian Classrooms can be accessed here: http://eli‌|‌tiss‌|‌edu/wp-content/uploads/2017/08/Comprehensive_Literacy_Practitioner_Brief_12_PDF‌|‌pdf

आपके पास पुस्तकों को सँभालने के लिए एक दीवार रैक भी हो सकती है; लेकिन ध्यान रहे कि बच्चे रैक के सबसे उपरी(खाने तक भी पहुँच सकें । (चित्र 4 बी)



चित्र 4 ए *और बी।ऐसी कक्षाओं में जहां जगह की कमी है, आप कार्टन, लकड़ी के बक्से, तार जिस पर किताबें लटकाई जा सकती हैं, दीवार की रैक का उपयोग करके पुस्तकालय बना सकते है ।* ***चित्र सौजन्य :*** *मृदुला कोशी, टीसीएलपी; रूचि धोना, लेट्स ओपन अ बुक।*

यदि जगह की दिक्कत नही हो तो आप पुस्तकों का डिस्प्ले (प्रदर्शन) भी कर सकते हैं । देखें चित्र 5 बुक डिस्प्ले बच्चों को उनके पास उपलब्ध पुस्तकों को जानने के बारे में मदद करता है। आप बच्चों के काम को भी डिस्प्ले कर सकते हैं। आप विषय-वस्तु (थीम)के अनुसार भी डिस्प्ले कर सकते हैं – किसी विषय पर आधारित सावधानीपूर्वक चयनित किताबें और उस विषय को निरुपित करते हुए सामग्री से सजाते हुए ।



चित्र : 5 बारिश (बायें) और रात (दायें) जैसे विषय पर डिस्प्ले दिखाता चित्र
चित्र सौजन्य :Bookworm Library,goa

यदि आप पानी या बारिश की थीम रखना चाहते हैं तो आपको अपने किताबों के संग्रह में से उन सभी पुस्तकों को

चुनना होगा जिसमें यह मुख्य या सहायक विषय है|आप डिस्प्ले (प्रदर्शन) को समुंदरी सीप, कंकड़, रेत या लहराते हुए नीले या हरे कपड़ो का उपयोग करके भी सजा सकते हैं। यदि आपकी कक्षा में जगह है और पुस्तकों का बड़ा संग्रह है, तो आप डिस्प्ले को बारबार बदल- भी सकते हैं। इस तरह के डिस्प्ले (प्रदर्शन) बच्चों के लिए सीखने का मज़ेदार अनुभव हो सकता है क्योंकि वे कहानियों को अपनी साक्षरता , भाषा और पाठ्यक्रम के अलग-अलग कोर्स के भाग के रूप में छान-बीन करते हैं।

किताबों के संकलन को व्यवस्थित करना

Accession संख्या :- अपने संकलन में उपलब्ध पुस्तकों और सामग्री का रिकॉर्ड रखना अच्छा होगा। एक Accession रजिस्टर आपके पुस्तकालय में पुस्तकों को सूचीबद्ध करने में मदद करता है। जब भी आप अपने संकलन में नई पुस्तकें जोड़ें तो इस रजिस्टर को अपडेट (Update)कर सकते हैं। यदि आप कभी भी छात्रों को किताबें देते हैं, तो उसे छात्र के नाम के आगे रजिस्टर में दर्ज करना सुविधाजनक होगा । यदि आप साक्षरता गतिविधि के रूप में पुस्तक निर्गम कार्ड [13] को चुनते हैं, तो Accession (पंजीकरण) संख्या काम को और आसान कर सकती है।

रजिस्टर में संकलन की प्रत्येक पुस्तक का विवरण विस्तार से भरें |आपके पास जो पहली पुस्तक है उसके शीर्षक, लेखक और प्रकाशक आदि विवरण के साथ उसे '1'संख्या दे सकते है | इस प्रकार जो संख्या उस पुस्तक को देंगे वह उसकी Accession(पंजीकरण) संख्या होगी। इस प्रकार सभी किताबों में Accession(पंजीकरण) संख्या डालें और अगर आपके पास स्कूल की मुहर भी है तो पुस्तक के एक किनारे में और पुस्तक के अंदर कुछ अन्य स्थानों पर मुहर लगाएँ (मुहर को एक कोने पर ही लगाये ताकि किसी चित्र या पाठ की पंक्तियों पर कोई निशान न आए) । इस प्रक्रिया को आपके संकलन की अन्य पुस्तकों के लिए भी अपनाएँ।

वर्गीकरण का तरीका : हम पढ़ने के स्तर और विधा के आधार पर किये गए वर्गीकरण की एक आसान सी प्रक्रिया की सलाह देते हैं।

पढ़ने का स्तर : कहानी/उपन्यास को व्यवस्थित करने का एक सरल तरीका यह है कि अलग-अलग पठन स्तरों के लिए अलग-अलग रंगों का लेबल लगा दिए जाएं

- लाल :ये इमर्जेंट और प्रारंभिक स्तर के पाठकों के लिए हैं जो अभी पढ़ना सीख रहे हैं। शब्द-रहित चित्र पुस्तकें , चित्र को लेबल करने वाले या सरल दोहराव्पूर्ण शब्द वाले चित्र पुस्तकों के आवरण के किनारे हिस्से (Spine) पर लाल स्टिकर लगा सकते हैं।
- पीला : ये मध्यम स्तर के पाठकों के लिए हैं जो सरल शब्दों को डिकोड कर सकते हैं और चित्रों की सहायता से या बिना चित्र के अर्थ भी निकल सकते हैं। साधारण एक या दो पंक्तियों वाली चित्र पुस्तकें या एक पृष्ठ पर केवल कुछ वाक्यों वाली पुस्तकों को इस वर्ग में रखा जा सकता है।

[13] Refer to ELI's Practitioner Brief 3, "Promoting Language and Literacy Development through School Libraries" to understand how you could make and use borrowing cards|

- नीला :यह ऐसे पाठकों के लिए है जो लंबे वाक्यों को पढ़कर पाठ का अर्थ समझने में सहज होते हैं। इस वर्ग में चित्रों अथवा बिना चित्रों वाली बड़ी किताबें हो सकती हैं ।

विधाएँ (Genres) : एक आदर्श कक्षा पुस्तकालय में इस प्रकार की किताबें होनी चाहिए।

- संदर्भ पुस्तक:यह ऐसी पुस्तकें हैं जिनको पाठक संदर्भ के लिए देख सकते हैं ,लेकिन इनको घर नहीं ले जा सकते। जैसे विश्वकोश, शब्दकोश,मानचित्रावली (एटलस)।
- सूचना पुस्तकें :यह पुस्तकें व्यक्ति,वस्तु तथा स्थान के बारे में बताती हैं(बेयर्ड 2012) सभी गैर-काल्पनिक पुस्तकें (non-fiction books)तथा पाठ्यपुस्तक इससे सम्बंधित हैं। गैर- काल्पनिक पुस्तकों को आप जीवनी, आत्मकथा,विज्ञान,सामाजिक विज्ञान ,पर्यावरण विज्ञान ,गणित ,यात्रा वृतांत ,भोजन बनाने की विधि वाली किताबें आदि के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं।
- काल्पनिक पुस्तकें (Fiction books)- ये सभी प्रकार की कहानियों की किताबें हैं- शब्द रहित चित्र -पुस्तकों से लेकर चित्र वाली पुस्तकें और अध्याय पुस्तकों तक । अपने संकलन में किताबों की संख्या के आधार पर आप काल्पनिक पुस्तकों को चित्र पुस्तक ,अध्याय पुस्तक आदि में वर्गीकृत कर सकते हैं।
- कविता : राइम्स , कविताएँ आदि को इस विधा के अंतर्गत रखा जा सकता है।
- अन्य सामग्री :जो इस स्टॉक का हिस्सा हो सकते हैं वे समाचार पत्र ,पत्रिकाएं ,नक्शे ,पोस्टर, दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि हैं (यदि आपके पास इनके लिए संसाधन है)।

लाइब्रेरी/पुस्तकालय का प्रबंधन कौन करता है ?यह विचार करना आवश्यक है कि कक्षा लाइब्रेरी का स्वामित्व और उसकी ज़िम्मेदारी कौन लेता है ?क्या यह प्राथमिक कक्षा के शिक्षक की ज़िम्मेदारी है या बच्चों की? क्या बच्चों के अभिभावक भी इस भूमिका को निभा सकते हैं? जब यह एकमात्र कक्षा लाइब्रेरी/पुस्तकालय के रूप में बन जाये, तो क्या स्कूल की कोई भूमिका बनती है ?आपको क्या लगता है कि आपकी कक्षा पुस्तकालय के सम्पूर्ण रखरखाव,प्रबंधन में कौन सहायता कर सकते हैं ?क्योंकि हम एक प्राथमिक कक्षा लाइब्रेरी को स्थापित करने का विचार कर रहे हैं इसलिए इसका मुख्य रूप से दायित्व शिक्षक पर है जो अपने छात्रों के पढ़ने के स्तर ,उनकी रुचि ,उनके भाषा सीखने की ज़रूरतों को जानता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि आप बच्चों से अपेक्षा करें और कक्षा पुस्तकालय के प्रबंधन की सामूहिक ज़िम्मेदारी लेने में बच्चों की मदद करें । अगर आप चाहे तो बच्चे बारी-बारी से पुस्तकालय प्रतिनिधि के रूप में कक्षा पुस्तकालय के रखरखाव और मरम्मत के लिए आपकी मदद कर सकते हैं ।

बच्चों को पुस्तकों की देखभाल करना ,उन्हें अच्छी स्थिति में बनाए रखना ,फटी पुस्तकों की मरम्मत करना , उनका उपयोग करना तथा उन नियमों के अनुसार उन्हें वापस करना जो आपने मिलकर बनाये है आदि सिखाया जाना चाहिए। आप बच्चों से पुस्तकों से अपने लगाव के बारे में और जिन चीज़ों से आपको लगाव होता है उनकी देखभाल कैसे करते हैं इस बारे में बात कर सकते हैं। आप बच्चों को दिखाएं कि आप अपनी पुस्तकों के संग्रह की देखरेख कैसे करते हैं और समय के साथ वह इनका अनुकरण करने लग जाते है।



चित्र : 6 बच्चे अपनी कक्षा लाइब्रेरी में किताबें उलट-पलट के देख रहे हैं।

चित्र सौजन्य :*रूचि धोना के सौजन्य से , चलो किताब पढ़े।*

पुस्तकों का लेन देन : यह सबसे चुनौतीपूर्ण निर्णयों में से एक है जो आपको प्राथमिक कक्षा के शिक्षक होने के नाते लेना होता है क्योंकि कक्षा पुस्तकालय में किताबों का सीमित संकलन होता है। बहुत से शिक्षक ,बच्चों को अमूल्य पुस्तकों को घर ले जाने की अनुमति देने के बारे में चिंतित हो सकते हैं। क्या वे उन्हें वापस करेंगे ?क्या वे उन्हें संभाल कर रखेंगे ?लेकिन जैसा कि पहले बताया गया है, यदि हम किताबों के संकलन और उन्हें अच्छी स्थिति में रखने की सामुहिक ज़िम्मेदारी लेने में विश्वास करते हैं तो शुरू से ही प्रजातान्त्रिक प्रक्रिया अपनाने का प्रयास करना चाहिए।इसके बावजूद भी यदि आपको लगता है कि आपके बच्चे किताबों को लौटाने तथा उनकी देखभाल करने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं हैं तो जब आप पहली बार अपनी कक्षा लाइब्रेरी/पुस्तकालय शुरू करते हैं तब यह महत्वपूर्ण है कि आप समय के साथ बच्चों से कैसे बातचीत करते हुए उन्हें अपने कक्षा लाइब्रेरी के मूल्य को समझाने में मदद करते है जिससे भविष्य में वह पुस्तकों के प्रति लगाव तथा ज़िम्मेदारी की भावना को विकसित कर पाएंगे । आप अपने छात्रों को पुस्तक देने के नियम तय करने में चर्चा का एक हिस्सा भी बना सकते हैं तथा ऐसी प्रणाली का निर्माण कर सकते है जो निष्पक्ष और आसान हो।

पुस्तक लेने की प्रक्रिया कक्षा पुस्तकालय रजिस्टर का इस्तेमाल करना एक बहुत ही आसान विधि है जिसे आप अपनी कक्षा में तुरंत इस्तेमाल कर सकते हैं, यदि आपने सभी पुस्तकों पर पंजीकरण accesstionसंख्या डाल दिया है। आप प्रत्येक बच्चे को हर हफ्ते एक किताब दे सकते हैं। इसके लिए आपको एक बड़े रजिस्टर की आवश्यकता

होगी.

दोहरे पेज से शुरू करते हुए, सबसे ऊपर महीने का नाम लिखें। इसमें 5- 6कॉलम होने चाहिए। पहले कॉलम में आपकी कक्षा के छात्रों के नाम होंगे। बाकी कॉलम की पहली पंक्ति में वह तारीखें होंगी जब पुस्तक दी गई (जैसे -: हफ्ते का प्रत्येक शुक्रवार वह तारीख हो सकती है जब आप पुस्तके देंगे)प्रत्येक बच्चे के नाम के सामने, शेष कॉलम की पंक्तियों में आप पुस्तकों के accession (पंजीकरण) संख्या दर्ज करेंगे जो उस हफ्ते ली गयी।एक बार जब बच्चे द्वारा पुस्तक वापिस लौटा दी जाए तो आप उस accession (पंजीकरण) संख्या को काट दें। यदि बच्चा किताब वापस नहीं करता है तो accession(पंजीकरण) संख्या आपको यह पहचानने में मदद करेगी कि कौन सी पुस्तक की वापसी नहीं हुई है। नीचे एक उदाहरण दिया है जिसमें यह दिखाया गया है कि रजिस्टर कैसा दिखेगा

June, 2019					
Name	07/06	14/06	21/06	28/06	
Aditya	*Accession Number*				
Ananya	*Accession Number*				
Bindu	*Accession Number*				
Chaitra	*Accession Number*				
Deva	*Accession Number*				

निष्कर्ष

एक बार जब हम कक्षा पुस्तकालय को स्थापित करके प्रणाली को नियमित और प्रभावी रूप से उपयोग करने लगते है, तब हम जल्द ही सकारात्मक प्रभाव को देख पाएंगे | यह छोटा सा कदम हमारे बच्चों में किताबों के प्रति लगाव और पढ़ने के प्रति लालसा उत्पन्न करेगा । यह पहला कदम हो सकता है ऐसे शिक्षार्थियों के रूप में विकसित करने में जो और पुस्तकों की उपलब्धता की सराहना करते हैं एवं उनकी कीमत समझते हैं । साथ ही यह पहला कदम हो सकता है पढने-लिखने की प्रक्रिया को ज़्यादा आनंदपूर्ण व साथ ही साथ सुव्यवस्थित बनाने में। आपके लिए भी , एक शिक्षक के रूप में आप भी देखेंगे किआपके शिक्षण के लिए कक्षा पुस्तकालय कितना बड़ा संसाधन है! बच्चों को भी इसका बहुत लाभ होगा, खासकर तब जब उनके पास घर में किताबों की उपलब्धता ना हो।

References

Baird, N (2012). *Setting up and running a school library*. Portsmouth, NH: Heinemann.

Galda, L. (1998). Mirrors and windows: Reading as transformation. In T. E. Raphael & K. H. Au (Eds.), *Literature based instruction: Reshaping the curriculum* (pp. 1–11). Norwood, MA: Christopher-Gordon.

Mukunda, U (2015). *Guide to setting up an open library in primary schools*. Retrieved from: https://cfl.in/wp-content/uploads/2010/07/Manual.pdf

Mills, W (2011). Identifying key components of successful libraries and librarians. *Bookbird: A Journal of International Children's Literature,* 49(1), 53-62.

Neuman, B. S. (2001). The importance of the classroom library. *Early Childhood Today*, Vol. 1(5), p. 12.

Author: Harshita V. Das

Conceptual Support and Editing: Shailaja Menon

Copy Editing: Chetana Divya Vasudev

Layout and Design: Harshita V. Das

The author would like to acknowledge the support of the following persons:
Keerti Jayaram (OELP, Rajasthan), Thejaswi Shivanand, Deepali Pitre Correya (Bookworm, Goa)